सामर्थी बनाना
अधिवेशन 4

एक आर्थिक क्रान्ति

एक आर्थिक क्रान्ति

एक वैकल्पिक जीवन शैली का एक तत्व जिसके बारे में हमने पिछले अधिवेश्न में चर्चा की वो ''एक आर्थिक क्रान्ति है''। आओ अब हम नई जीवन शैली के इस पहलु का अनुसरण थोडा और गहराई से करें।

एक आर्थिक क्रान्ति के इस विषय का केन्द्र परमेश्वर के **स्वामित्व** और मनुष्य के **भण्डारीपन** को समझना है।

भण्डारीपन हमारी आराधना में भौतिक चीजों के इस्तेमाल का अनुशासन है।

हमारे लिए इन दिनों और युग में, ''भण्डारीपन'' की धारणा एक आश्चर्यजनक विचार है। आधुनिक शब्दों में एक भण्डारी का पर्यायवाची ''आर्थिक सम्पत्ति की देखरेख'' से हो सकता है।

नए नियम के दिनों में, बहुत बार एक भण्डारी एक विश्वस्त गुलाम होता था। वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसके पास सम्पत्ति के, भौतिक वस्तुओं के, और शायद कर्मचारियों के प्रबन्ध के असल वरदान थे।

- उसके स्वामी की सारी वस्तुए उसके नियंत्रण में होती थी।
- वह अपने स्वामी के प्रति उतरदायी था।
- उसका अपना कुछ नहीं होता था।
- पर उसे अपने आधीन वस्तुओं का सही प्रयोग करना था, इसे फलदायी बनाना और इसे बढ़ाना था।
- और उसे अपने स्वामी को इस सबका लेखा–जोखा देना था।

आप अपने नोटस में लिख सकते हैं कि एक भण्डारी यह बात जानता था कि जो कुछ उसके पास है वह **उसका** नहीं है परन्तु **परमेश्वर** का है।

जब हम इस सत्य को जान जाते हैं तब हम इस बात को महसुस करते हैं कि, यहां पर एक भी वस्तु ऐसी नहीं है जिसे हम अपनी कह सकते हैं या अपनी बना सकते हैं।

- परमेश्वर हमें योग्यताएं देता है
- परमेश्वर हमें अवसर देता है
- परमेश्वर हमें सामर्थ देता है
- परमेश्वर हमें स्वास्थय देता है
- परमेश्वर ने हमें वह सब कुछ दिया जो खरीदने और कमाने के लिए जरूरी हैं, और उन सब चीजों को प्राप्त करें जो हमारे पास में है।

इसलिए सब कुछ उससे सम्बन्धित है और यदि हम उसके एक भण्डारी हैं तब हम उसके प्रति उत्तरदायी हैं।

एक आर्थिक क्रान्ति

आराधना की हमारी जीवन शैली में आधारभूत तत्व़ निम्न बातों की समझ हैः

परमेश्वर का **स्वामित्व** और मनुष्य का **भण्डारीपन**

भण्डारीपन हमारी आराधना में भौतिक चीजों के इस्तेमाल का अनुशासन है।

एक **भण्डारी** जानता है कि उसके पास जो है वह :

''उसका'' नहीं परन्तु **''परमेश्वर''** है

कोई भी चीज़ हमारे हाथों में नहीं आती है जिस पर हम यह दावा करें कि वह हमारी है। हमारा प्रभु सब कुछ का स्वामी है और हमें वह उनके उपर नियंत्रण करने की अनुमति देता है। हम उसे, इनके प्रयोग में अपनी विश्वासयोग्यता के अनुसार इसका लेखा जोखा देगें।

दशवांश **नींव है जिस पर भंडारीपन के जीवन का निर्माण होगा।**

दशमांश, जो परमेश्वर ने हमें दिया उसमें से **''प्रथम'' 10 प्रतिशत** उसे वापस देना है!

— यह परमेश्वर के स्वामित्व और हमारे भंडारीपन की **निरन्तर घोषणा** है

— यह परमेश्वर की आरधना में हमारी भौतिक सम्पत्ति के लिए **विशेष हिस्से दारी** का प्रबन्ध करता है।

'दशंमांश सिखाने का अभिप्राय ये है कि तुम हमेशा अपने जीवन में परमेश्वर को प्रथम रखो'' — व्यवस्थाविवरण 14:23

दशंमांश **परमेश्वर से संबधिंत** हैं।

दशंमांश की प्रथा मिस्रीयों, बाबुल, युनान और रोम के इतिहास में रिकार्ड की गई है। अब्राहम ने मूसा द्वारा व्यवस्था देने के 500 वर्ष पूर्व मलकिसिदीक को दशमांश दिया (उत्पत्ति 14:20)। दशमांश पहचाना गया और याकुब के द्वारा पूरे जीवन भर चलाया गया (उत्पत्ति 28:22)। जब व्यवस्था आई तो इसकी आवश्यकता कानूनी हो गई।

लैव्यवयवस्था 27:30 *''सारी भूमि का दशमांश... प्रभु का है।''*

गिनती 18:26 *''जब तुम इस्राएल के बच्चों से दशमांश लो...''*

दशवांश ही वह नींव है जिस पर भंडारीपन के जीवन का निर्माण होगा।

दशवांश हरेक के लिए जाना पहचाना शब्द नहीं है। यह शाब्दिक अर्थों में जो कुछ हम प्राप्त करतें हैं और जो कुछ हमारे पास में है का **''प्रथम'' 10 प्रतिशत** है। जब हम दशवांश देते हैं तो हम जो कुछ उसने हमे सौपा उसका दस प्रतिशत वापस उसे प्रस्तुत करते है।

जब हम दशवांश के इस नियम को अपने जीवन में लागू करते हैं तो दो बातें घटती हैं :

- सबसे पहले यह परमेश्वर के स्वमित्व और भण्डारीपन की **निरन्तर घोषणा** बन जाती है।

2 कुरिन्थियों 8 में पौलुस लिखता है, *''यह अपने प्रेम की वास्तविकता को दिखाने का एक तरीका है क्योंकि यह शब्दो के अर्थों से आगे बढ़ता हैं।''*

प्रेम और समर्पण के बारे में बात करना आसान हैं परन्तु जब हम इसे अपने बटुए की नकदी से कार्य रूप देना हो तो इसे असल में सच्चा होना चाहिए।

- यह परमेश्वर की आरधना में हमारी भौतिक सम्पत्ति के लिए **विशेष हिस्से दारी** का प्रबन्ध करतो है।

यह परमेश्वर की महत्वपूर्ण तरीके से पहचान कराता है; इस तरह कि इसका प्रभाव हमारे पैसे पर पड़ता है।

यदि यह हमारी आर्थिक स्थिति पर कोई प्रभाव नहीं डालता तो यह हमारे महान परमेश्वर के योग्य नहीं है।

लीविंग बाइबल अनुवाद के अनुसार व्यवस्था विवरण 14:23 में ऐसे लिखा है, *''दशंवांश का उद्धेश्य यह है कि हमेशा परमेश्वर को अपने जीवनो में प्रथम स्थान पर रखना।''*

इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर गरीब है उसे हमारे पैसे की जरूरत है उसने यह कानून इसलिए नहीं बनाया कि परमेश्वर के लोग इसलिए दशवांश दे कि वह धनी बन जाऐ। नहीं, *''पहाड़ का हर पशु उसका है, और हरेक खान की सम्पत्ति उसी की है''।*

परन्तु वह हमें दशवांश देने के लिए निर्देश देता है क्योंकि वह हमे प्रेम करता है, और आशिष देना चाहता है! और वह जानता है कि आशिषित होने के लिए हमें हमेशा ''लेते रहने'' वाली आत्मा से आज़ाद होना होगा। हमें देने की आत्मा का निर्माण करने की जरूरत है। इसका निर्माण उस समय शुरू हो जाता है जब हम दशवांश देने के द्वारा उसका आदर करते हैं।

इसलिए यह हमारी भलाई के लिए है, वह हमें निर्देश देता है कि, हम न केवल अपनी सम्पति मे प्रथम स्थान दें वरन अपने जीवन मे हर क्षेत्र में। यही कारण है कि परमेश्वर हमसे दशवांश चाहता है।

एक आर्थिक कान्ति

आराधना की हमारी जीवन शैली में आधारभूत तत्व़ निम्न बातों की समझ हैः

परमेश्वर का **स्वामित्व** और मनुष्य का **भण्डारीपन**

भण्डारीपन हमारी आराधना में भौतिक चीजों के इस्तेमाल का अनुशासन है।

एक **भण्डारी** जानता है कि उसके पास जो है वह :

''उसका'' नहीं परन्तु **''परमेश्वर''** है

कोई भी चीज़ हमारे हाथों में नहीं आती है जिस पर हम यह दावा करें कि वह हमारी है। हमारा प्रभु सब कुछ का स्वामी है और हमें वह उनके उपर नियंत्रण करने की अनुमति देता है। हम उसे, इनके प्रयोग में अपनी विश्वासयोग्यता के अनुसार इसका लेखा जोखा देगें।

दशवांश **नींव है जिस पर भंडारीपन के जीवन का निर्माण होगा।**

दशमांश, जो परमेश्वर ने हमें दिया उसमें से **''प्रथम'' 10 प्रतिशत** उसे वापस देना है!

– यह परमेश्वर के स्वामित्व और हमारे भंडारीपन की **निरन्तर घोषणा** है

– यह परमेश्वर की आरधना में हमारी भौतिक सम्पत्ति के लिए **विशेष हिस्से दारी** का प्रबन्ध करता है।

'दशंमांश सिखाने का अभिप्राय ये है कि तुम हमेशा अपने जीवन में परमेश्वर को प्रथम रखो'' – व्यवस्थाविवरण 14:23

दशंमांश **परमेश्वर से संबधिंत** हैं।

दशंमांश की प्रथा मिस्रीयों, बाबुल, युनान और रोम के इतिहास में रिकार्ड की गई है। अब्राहम ने मूसा द्वारा व्यवस्था देने के 500 वर्ष पूर्व मलकिसिदीक को दशमांश दिया (उत्पत्ति 14:20)। दशमांश पहचाना गया और याकुब के द्वारा पूरे जीवन भर चलाया गया (उत्पत्ति 28:22)। जब व्यवस्था आई तो इसकी आवश्यकता कानूनी हो गई।

लैव्यवयवस्था 27:30 *''सारी भूमि का दशमांश... प्रभु का है।''*

गिनती 18:26 *''जब तुम इस्राएल के बच्चों से दशमांश लो...''*

कृप्या अपने नोटस में लिखें दशवांश **<u>परमेश्वर से संबधिंत</u>** है!

. पूरी बाइबल मे इसके बारे में बड़ी शक्ति के साथ शिक्षा दी गई है।

दशवांश एक ऐसी बात है जिसे मनुष्य के हृदय में रोपा गया है और ये मिस्रीयों, बाबुल के लोग, यूनानीयों और रोमियों के द्वारा अभ्यास मे लाई गई।

यहां पर कलीसिया में आज बहुत से लोग हैं जो ये कहते हें, ''दशंवांश पुराने नियम का हिस्सा था। हम अब व्यवस्था के आधीन नहीं है और इसलिए हमें दशवांश देने की जरूरत नहीं है''।

तौभी, दशवांश व्यवस्था के आने के बहुत पहले से आरम्भ हुआ।

- अब्रहम ने दशवांश मल्किसिदक को व्यवस्था की स्थापना के 500 साल पहले दिया।

- अब्रहम के पोते याकुब ने भी दशवांश दिया।

- परमेश्वर से व्यवस्था प्राप्त करने के बाद मूसा और इस्राएल की सन्तान एक राष्ट्र के रूप मे निर्मित होन लगे, मूसा ने बार–बार दशवांश देने के नियम को लोगों को बताया

  लैव्यवस्था 27:30 *''...सारी भूमि का दशमांश... प्रभु का है।''*

  यह संदर्भ हमें बताता है कि इस निर्देश का अर्थ है कि पृथ्वी पर पैदा हुई सभी तरह की फसल और फल परमेश्वर से सम्बन्धित है।

  गिनती 18:26 *''...जब तुम इस्राएल के बच्चों से दशमांश लो।''*

एक आर्थिक कान्ति

आराधना की हमारी जीवन शैली में आधारभूत तत्व़ निम्न बातों की समझ हैः

परमेश्वर का **स्वामित्व** ..... और मनुष्य का **भण्डारीपन** .....

भण्डारीपन हमारी आराधना में भौतिक चीजों के इस्तेमाल का अनुशासन है।

एक **भण्डारी** जानता है कि उसके पास जो है वह :

''उसका'' .....नहीं परन्तु **''परमेश्वर''** ..... है

कोई भी चीज़ हमारे हाथों में नहीं आती है जिस पर हम यह दावा करें कि वह हमारी है। हमारा प्रभु सब कुछ का स्वामी है और हमें वह उनके उपर नियंत्रण करने की अनुमति देता है। हम उसे, इनके प्रयोग में अपनी विश्वासयोग्यता के अनुसार इसका लेखा जोखा देगें।

दशवांश .....**नींव है जिस पर भंडारीपन के जीवन का निर्माण होगा।**

दशमांश, जो परमेश्वर ने हमें दिया उसमें से **''प्रथम'' 10 प्रतिशत** ..... उसे वापस देना है!

– यह परमेश्वर के स्वामित्व और हमारे भंडारीपन की **निरन्तर घोषणा** .....है

– यह परमेश्वर की आरधना में हमारी भौतिक सम्पत्ति के लिए **विशेष** ..... **हिस्से दारी** ..... का प्रबन्ध करता है।

'दशंमांश सिखाने का अभिप्राय ये है कि तुम हमेशा अपने जीवन में परमेश्वर को प्रथम रखो'' – व्यवस्थाविवरण 14:23

दशंमांश **परमेश्वर से संबधिंत** ..... हैं।

दशंमांश की प्रथा मिस्रीयों, बाबुल, युनान और रोम के इतिहास में रिकार्ड की गई है। अब्राहम ने मूसा द्वारा व्यवस्था देने के 500 वर्ष पूर्व मलकिसिदीक को दशमांश दिया (उत्पत्ति 14:20)। दशमांश पहचाना गया और याकुब के द्वारा पूरे जीवन भर चलाया गया (उत्पत्ति 28:22)। जब व्यवस्था आई तो इसकी आवश्यकता कानूनी हो गई।

लैव्यवयवस्था 27:30 *''सारी भूमि का दशमांश... प्रभु का है।''*

गिनती 18:26 *''जब तुम इस्राएल के बच्चों से दशमांश लो...''*

व्यवस्थाविवरण 14:22... *''तुम सब बढ़ती में से दशमांश निकालोगे...''*

. नीतिवचन 3:9... *''परमेश्वर का सम्मान... अपनी भूमि की प्रथम उपज से करो। सब मनुष्यों में बुद्धिमान पुरूष ने लिखा (सुलेमान)।*

परमेश्वर को दशवांश देना इतना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर ने मलाकी भविष्यद्वक्ता के द्वारा दशवांश के बारे में विशेष निर्देश दिये। **मलाकी 3:8—12** इस विषय पर परमेश्वर के दृष्टिकोण को दिखाता है।

इन पदों का सदंर्भ मलाकी 3:7 मे मिलता है, जहां पर परमेश्वर इस्राएल की सन्तान को व्यवस्था से लगातार दूर होने के कारण झिड़कता है, *''अपने पुरखाओं के दिनो से तुम लोग मेरी विधियों से हटते आए हो और उनको पालन नहीं करते। तुम मेरी ओर फिरो तब मैं भी तुम्हारी ओर फिरूंगा, सेनाओ के यहोवा का यही वचन है; परन्तु तुम पूछते हो, हम किस बात में फिरें?*

हम पुराने नियम में कई स्थानों पर पढ़ सकते हैं, जहां परमेश्वर के लोग परमेश्वर को छोड़ दूसरे ईश्वरों, दूसरे कर्मकाण्डों को, परमेश्वर के रास्तों के बजाए दूसरे रास्तो का अनुसरण करने लगे और बहुत बार परमेश्वर उनके पास आता था और कहता था जैसा उसने यहां कहा, ''मेरी ओर फिरो'', और वे कहते थे, ''हमने क्या किया है? हम क्या गलत कर रहे हैं?'' क्योंकि या तो वे परमेश्वर के निर्देशों को समझने से चूक गए थे या उनके पिछे चलने से। इस्राएल की सन्तान का अकसर बंधुवाई या मुसीबत मे अन्त हुआ क्योंकि वे अनाज्ञाकारिता मे चल रहे थे, शायद वे इसे जानते भी न हों।

व्यवस्थाविवरण 14:22 *''तुम सब बढ़ती में से दशमांश निकालोगे...''*

नीतिवचन 3:9 *''परमेश्वर का सम्मान.... अपनी भूमि की प्रथम उपज से करो।''*

मलाकी 3:8–12 प्रगट करता है कि परमेश्वर दशमांश के मामले को कितना गम्भीरता से लेता है।

पद 8–9 परमेश्वर का **गम्भीर आरोप**

''क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है? देखो, तुम मुझ को धोखा देते हो और तो पूछते हो कि किस बात में तुझे लूटा है? दशमांश और उठाने की भेटों में, तुम पर भारी शाप पड़ा है क्योंकि तुम मुझे लूटते हो वरन् सारी जाति ऐसा करती है''।

पद 10 परमेश्वर का **विशेष निर्देश**

''सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे''।

पद 10–12 परमेश्वर की **अनन्त प्रतिज्ञा**

''ऐसा करके मुझे परखों कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलकर तुम्हारे लिए नाश करने वाले को ऐसा धुड़कूंगा कि वह तुम्हारी भूमि की उपज नाश न करेगा और तुम्हारी दाखलताओं के फल कच्चे न गिरेंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है, तब सारी जातियां तुम को धन्य कहेंगी क्योंकि तुम्हारा देश मनोहर देश होगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है''।

नए नियम के समय में

यीशु के द्वारा दशमांश की आज्ञा दी गई– मती 23:23

''हे फरिसीयो ओर कपटी शास्त्रीयो, तुम पर हाय तुम पुदीने और सौंप और जीरे का दशमांश देते हो परन्तु तुमने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात न्याय, दया ओर विश्वास को छोड़ को दिया है, चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते''।

प्रारम्भिक विश्वासीयों द्वारा दशमांश दिया जाता था। आयरेनियूस, लेयोन्स के बिशप सन् 177 में लिखते हैं कि यीशु ने दशमांश समाप्त नहीं किया परन्तु इसके और भी गहरे अर्थ कर दिए। ओरीजन (सन् 185–253 में) घोषणा करते है कि, मसीहीयों के ऊपर दशमांश एक कानून या बन्धन था। चौथी सदी की चार महासभाओं ने दशमांश देने की घोषणा की और सेविले की काउसिंल सन् 590 में घोषणा करती है, *''यदि कोई हर चीज का दशंमांश नहीं देता तो वह चोर और डाकू है''*।

इसलिए परमेश्वर उनसे क्या कहता है जब वे उससे ये कहते हैं, ''हम कैसे मन फिरांए?''

- सबसे पहले उसने पद 8 और 9 में **गम्भीर आरोप** लगाए

  ''क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है? देखो, तुम मुझ को धोखा देते हो और तो पूछते हो कि किस बात में तुझे लूटा है?'

  - शायद यह एक सत्य कथन है क्योंकि 60 से 70 प्रतिशत लोग हर रविवार सुबह चर्च जाते हैं, उन्हें इस बात का कोई अहसास नहीं कि वे चोरों के अहोदे पर हैं।

  - बहुत सी चर्चे हर सप्ताह दान लेती है। दान लेने वाले थैली आगे बढ़ाते हैं। सोचिए यदि दान लेने वाले के घर में कुछ जरूरते हैं और वह हर रविवार दस रूपये दान की थैली में से निकाल ले। क्या आप इसे चुराना कहेंगे? हां।

  - यदि आपको कोई बिल जमा करना है या कुछ और काम है, और आपने वो दस रूपया जो दान देने के लिए रखा था, बिल जमा करने के लिए प्रयोग कर लिया इसकी बजाए की उस दस रूपये को दान के समय चर्च में दिया जाता। क्या भिन्नता होगी? यदि यह परमेश्वर का है, यदि दशवांश प्रभु से संबंधित है, तो क्या भिन्नता है यदि इसे दान देने से पहले या बाद में प्रयोग कर लिया गया हो? परमेश्वर को तो नही मिला।

व्यवस्थाविवरण 14:22 *''तुम सब बढ़ती में से दशमांश निकालोगे...''*

नीतिवचन 3:9 *''परमेश्वर का सम्मान.... अपनी भूमि की प्रथम उपज से करो।''*

मलाकी 3:8–12 प्रगट करता है कि परमेश्वर दशमांश के मामले को कितना गम्भीरता से लेता है।

गम्भीर आरोप

पद 8–9 परमेश्वर का .....

''क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है? देखो, तुम मुझ को धोखा देते हो और तो पूछते हो कि किस बात में तुझे लूटा है? दशमांश और उठाने की भेटों में, तुम पर भारी शाप पड़ा है क्योंकि तुम मुझे लूटते हो वरन् सारी जाति ऐसा करती है''।

विशेष निर्देश

पद 10 परमेश्वर का .....

''सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे''।

अनन्त प्रतिज्ञा

पद 10–12 परमेश्वर की .....

''ऐसा करके मुझे परखों कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलकर तुम्हारे लिए नाश करने वाले को ऐसा धुड़कूंगा कि वह तुम्हारी भूमि की उपज नाश न करेगा और तुम्हारी दाखलताओं के फल कच्चे न गिरेंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है, तब सारी जातियां तुम को धन्य कहेंगी क्योंकि तुम्हारा देश मनोहर देश होगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है''।

नए नियम के समय में

यीशु के द्वारा दशमांश की आज्ञा दी गई– मती 23:23

''हे फरिसीयो ओर कपटी शास्त्रीयो, तुम पर हाय तुम पुदीने और सौंप और जीरे का दशमांश देते हो परन्तु तुमने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात न्याय, दया ओर विश्वास को छोड़ को दिया है, चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते''।

प्रारम्भिक विश्वासीयों द्वारा दशमांश दिया जाता था। आयरेनियूस, लेयोन्स के बिशप सन् 177 में लिखते हैं कि यीशु ने दशमांश समाप्त नहीं किया परन्तु इसके और भी गहरे अर्थ कर दिए। ओरीजन (सन् 185–253 में) घोषणा करते है कि, मसीहीयों के ऊपर दशमांश एक कानून या बन्धन था। चौथी सदी की चार महासभाओं ने दशमांश देने की घोषणा की और सेविले की काउसिंल सन् 590 में घोषणा करती है, *''यदि कोई हर चीज का दशंमांश नहीं देता तो वह चोर और डाकू है''*।

० तब पद 10 में परमेश्वर का **<u>विशेष निर्देश</u>** है

''सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे''।

- यहां पर एक नियम है जिसे हम सब को समझने की जरूरत है। आज्ञाकारिता हमेशा आशिष को लाता है।

- इसलिए परमेश्वर का विशेष निर्देश है, ''सारे दशवांश भण्डार में ले आओ''।

० तब परमेश्वर हमें उसकी **<u>अनन्त प्रतिज्ञा</u>** देता है।

''ऐसा करके मुझे परखों कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलकर तुम्हारे लिए नाश करने वाले को ऐसा धुड़कूंगा कि वह तुम्हारी भूमि की उपज नाश न करेगा और तुम्हारी दाखलताओं के फल कच्चे न गिरेंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है, तब सारी जातियां तुम को धन्य कहेंगी क्योंकि तुम्हारा देश मनोहर देश होगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है''।

परमेश्वर कह रहा है, ''मुझे परखो''। मैं तुम्हारी भूमि में इस तरह काम करूंगा कि तुम्हारी उपज नाश नहीं होगी। कीड़े इसका नुकसान नहीं करेंगे, और सभी राष्ट्र देखेंगें और कहेगें, ''एक राष्ट्र जो परमेश्वर से आशिषित है!''

परमेश्वर कह रहा है, ''मुझे परखो और देखो कि मेरा गणित तुमसे कितना भिन्न है। देखो कि मेरे नियम तुमसे कितने भिन्न हैं। हा, मुझे परखो और मै तुम्हें आशिषित करूंगा!''

जब हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, और उसे उसके वचन के आधार पर परखते हैं तब हम स्वतंत्र हो जाते है और वह हमें आशिषित करता है।

यहां ऐसे बहुत सारे लोग नहीं है, जिनके पास देने के लिए अलग से दस न प्रतिशत हो, जिन्हें दशवांश देना आरम्भ करने में आसानी न हो। साधारणतया हम इस बात के साथ कुश्ती करते रहते हैं। हम अपने दिमागों मे चिन्तित होते है, कि हम यदि दशवांश देंगे तो आर्थिक रूप से मुश्किल में पड़ जाऐंगे। अकसर लोग यह कहते है, ''परमेश्वर मैं आर्थिक रूप से उजड़ जाउंगा यदि आप अपनी प्रतिज्ञा को जब मैं आपको परखता हूं, पूरी नही करते''।

आज के दिन तक मैने ऐसा कभी नहीं देखा कि जिस किसी ने परमेश्वर को परखा है उसे परमेश्वर ने फेल कर दिया हो।

यह जल्दी से धनवान बन जाने की योजना नहीं है! आप परमेश्वर को दस प्रतिशत इसलिए नहीं देने जा रहे कि, वह आपको वापस सौ प्रतिशत करे। आप ऐसा न करे तो भी परमेश्वर आपको वह सब कुछ देगा जिसकी आपको जरूरत है, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि वह आपकी सारी जस्रतों को पूरा करेगा। उसने यह नही कहा कि वह आपकी सारी चाहतों को पूरा करेगा। उसने कहा, ''मैं तेरी देखभाल करूंगा, तेरी जरूरत को पूरा करूंगा।''

व्यवस्थाविवरण 14:22 *''तुम सब बढ़ती में से दशमांश निकालोगे...''*

नीतिवचन 3:9 *''परमेश्वर का सम्मान.... अपनी भूमि की प्रथम उपज से करो।''*

मलाकी 3:8—12 प्रगट करता है कि परमेश्वर दशमांश के मामले को कितना गम्भीरता से लेता है।

पद 8—9 परमेश्वर का **गम्भीर आरोप**

''क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है? देखो, तुम मुझ को धोखा देते हो और तो पूछते हो कि किस बात में तुझे लूटा है? दशमांश और उठाने की भेटों में, तुम पर भारी शाप पड़ा है क्योंकि तुम मुझे लूटते हो वरन् सारी जाति ऐसा करती है''।

पद 10 परमेश्वर का **विशेष निर्देश**

''सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे''।

पद 10—12 परमेश्वर की **अनन्त प्रतिज्ञा**

''ऐसा करके मुझे परखों कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलकर तुम्हारे लिए नाश करने वाले को ऐसा धुड़कूंगा कि वह तुम्हारी भूमि की उपज नाश न करेगा और तुम्हारी दाखलताओं के फल कच्चे न गिरेंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है, तब सारी जातियां तुम को धन्य कहेंगी क्योंकि तुम्हारा देश मनोहर देश होगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है''।

नए नियम के समय में

यीशु के द्वारा दशमांश की आज्ञा दी गई– मती 23:23

''हे फरिसीयो ओर कपटी शास्त्रीयो, तुम पर हाय तुम पुदीने और सौंप और जीरे का दशमांश देते हो परन्तु तुमने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात न्याय, दया ओर विश्वास को छोड़ को दिया है, चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते''।

प्रारम्भिक विश्वासीयों द्वारा दशमांश दिया जाता था। आयरेनियूस, लेयोन्स के बिशप सन् 177 में लिखते हैं कि यीशु ने दशमांश समाप्त नहीं किया परन्तु इसके और भी गहरे अर्थ कर दिए। ओरीजन (सन् 185—253 में) घोषणा करते है कि, मसीहीयों के ऊपर दशमांश एक कानून या बन्धन था। चौथी सदी की चार महासभाओं ने दशमांश देने की घोषणा की और सेविले की काउसिंल सन् 590 में घोषणा करती है, *''यदि कोई हर चीज का दशंमांश नहीं देता तो वह चोर और डाकू है''*।

<u>नए नियम में</u> दशवांश की आज्ञा यीशु ने दी मती 23ः में यीशु ने फरिसीयों को ''श्राप'' दिया और कहा, *''हे फरिसीयो ओर कपटी शास्त्रीयो, तुम पर हाय तुम पुदीने और सौंप और जीरे का दशमांश देते हो परन्तु तुमने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात न्याय, दया ओर विश्वास को छोड़ को दिया है, चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते''।*

यीशु मसीह फरिसीयों का सामना कर रहे थे जो व्यवस्था के दाव पेच के जानकार थे। वे व्यवस्था के कानूनी निर्देशों का तो पालन करना चाहते थे, परन्तु उनके हृदय इससे बहुत दूर थे। यह तुम्हारे ''बीजों'' को दशवांश देना होगा। 9 बीज मेरे लिए, 1 परमेश्वर के लिए; 9 बीज मेंरे लिए, 1 परमेश्वर के लिए। यह तो बेतुकी बात है।

यीशु ने कहा, ''दशवांश ही सब कुछ नहीं है... तुम्हें दशवांश देना चाहिए परन्तु दशवांश से बढ़कर है जो कुछ करना है''। उन्होंने दशवांश देने को एक रीति रिवाज बना लिया था परन्तु वे इसके दयावान और कृपावान होने की बात को भूल गए थे।

आरम्भ की कलीसिया ने दशवांश देने के दायित्व के बारे में बोला। आप अपने नोटस में आरम्भिक कलीसिया के अगुवों की लेख में से कुछ लेखन को देखेंगे जिन्होंने दशवांश देने की बात की।

- आयरेनियूस, लेयोन्स के बिशप सन् 177
- ओरीजन (सन् 185—253)
- चौथी सदी कीं, चार महासभाएं
- सेविले की काउसिंल सन् 590

आरम्भिक विश्वासीयों के द्वारा दशवांश ऐतिहासिक रूप से अभ्यास मे लाया गया।

व्यवस्थाविवरण 14:22 *''तुम सब बढ़ती में से दशमांश निकालोगे...''*

नीतिवचन 3:9 *''परमेश्वर का सम्मान.... अपनी भूमि की प्रथम उपज से करो।''*

मलाकी 3:8–12 प्रगट करता है कि परमेश्वर दशमांश के मामले को कितना गम्भीरता से लेता है।

पद 8–9 परमेश्वर का **गम्भीर आरोप**

''क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है? देखो, तुम मुझ को धोखा देते हो और तो पूछते हो कि किस बात में तुझे लूटा है? दशमांश और उठाने की भेटों में, तुम पर भारी शाप पड़ा है क्योंकि तुम मुझे लूटते हो वरन् सारी जाति ऐसा करती है''।

पद 10 परमेश्वर का **विशेष निर्देश**

''सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे''।

पद 10–12 परमेश्वर की **अनन्त प्रतिज्ञा**

''ऐसा करके मुझे परखों कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलकर तुम्हारे लिए नाश करने वाले को ऐसा धुड़कूंगा कि वह तुम्हारी भूमि की उपज नाश न करेगा और तुम्हारी दाखलताओं के फल कच्चे न गिरेंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है, तब सारी जातियां तुम को धन्य कहेंगी क्योंकि तुम्हारा देश मनोहर देश होगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है''।

नए नियम के समय में

यीशु के द्वारा दशमांश की आज्ञा दी गई– मती 23:23

''हे फरिसीयो ओर कपटी शास्त्रीयो, तुम पर हाय तुम पुदीने और सौंप और जीरे का दशमांश देते हो परन्तु तुमने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात न्याय, दया ओर विश्वास को छोड़ को दिया है, चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते''।

प्रारम्भिक विश्वासीयों द्वारा दशमांश दिया जाता था। आयरेनियूस, लेयोन्स के बिशप सन् 177 में लिखते हैं कि यीशु ने दशमांश समाप्त नहीं किया परन्तु इसके और भी गहरे अर्थ कर दिए। ओरीजन (सन् 185–253 में) घोषणा करते है कि, मसीहीयों के ऊपर दशमांश एक कानून या बन्धन था। चौथी सदी की चार महासभाओं ने दशमांश देने की घोषणा की और सेविले की काउसिंल सन् 590 में घोषणा करती है, *''यदि कोई हर चीज का दशमांश नहीं देता तो वह चोर और डाकू है''*।

नए नियम की कलीसिया मे दशवांश संबधी कुंजी... दशवांश कानूनी होने की बजाए, व्यवस्था के प्रति दास्तव भरी आज्ञाकारिता थी। इसे परमेश्वर के प्रेम के लिए **<u>हृदय का प्रत्युतर</u>** होना था।

- प्रारम्भिक विश्वासी व्यवस्था से बंधे हुए नहीं थे, परन्तु प्रेम के बन्धन में थे।
- उनका भण्डारीपन प्रेम को स्वाभाविक प्रदर्शन था।
- फिर भी ये हमेशा समझा गया कि प्रेम का प्रत्युतर विश्वासी को कानूनी आवश्यकता से ऊपर ले जाएगा जो पुराने नियम में है।
    - हम यीशु के पहाड़ी उपदेश के हिस्से में देखते हैं।

        - ''व्यवस्था कहती है, तू हत्या न करना। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई किसी से अपने दिल से घृणा करेगा वह उसकी हत्या कर चूका।''
        - ''व्यवस्था कहती है, तू व्यभिचार न करना परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपन मन में उससे व्यभिचार कर चुका।''

        - इस तरह यीशु व्यवस्था को मान्यता तो देते है, परन्तु वह यह स्पष्ट कर देते है कि, परमेश्वर हमारे दिलो के प्रत्युत्तर का अधिक न्याय कर रहा है इसकी बजाए कि उन बाहरी कामों का जो हम करते है।

    - दशवांश के साथ भी यही बात सत्य है। परमेश्वर चाहता है कि हम अपने दशवांश में जो कुछ उसने हमें दिया को प्रगट करें और वह इसे जहां कही जरूरत है के प्रयोग के लिए आज़ाद है। कई बार परमेश्वर हमें उकसाता है कि, हम अपने बटुए को उसके लिए खाली कर दें, बिल्कुल वैसा ही जैसा उस विधवा के बारे में बताया — बड़ी बेतुकी सी बात है।

    - इसलिए नया नियम यह दिखाता है कि परमेश्वर के प्रेम के प्रति दशवांश देने वाले का भाव इस प्रकार होना चाहिए :

        - पहला **<u>हर्षपूर्ण</u>**

        2 कुरिंथि. 9:7... *''हर एक जन जैसा मन में ठाने दान करे, ना कुढ़ के ओर ना दबाव से क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है''*

        2 कुरिंथि. 8:7... *''वैसे ही दान के काम में भी बढ़ते जाओ''*

        यदि हम आपने दशवांश को देने में कुड़कुड़ाते हैं तो हमें इसे रख लेना चाहिए। परमेश्वर ''हर्ष से देने वाले'' को चाहता है।

हर एक व्यक्ति के **हृदय का प्रत्युतर** नया नियम का हमेशा मुख्य विषय रहा है। प्रारम्भिक विश्वासी व्यवस्था से बंधे हुए नहीं थे, परन्तु प्रेम के बन्धन में थे। उनका भण्डारीपन प्रेम का स्वाभाविक प्रदर्शन था। फिर भी ये हमेशा समझा गया कि प्रेम का प्रत्युतर विश्वासी को कानूनी आवश्यकता से ऊपर ले जाएगा जो पुराने नियम में है। (मती 5:21–42; लूका 12:1–4)।

उनका परमेश्वर के प्रति और दूसरों के प्रति प्रेम का प्रदर्शन इस तरह होगा :

पहला **हर्षपूर्ण**

''हर एक जन जैसा मन में ठाने दान करे, ना कुढ़ के ओर ना दबाव से क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है'' – 2 कुरिंथि. 9:7

''जो जैसे हर बात में अर्थात विश्वास, वचन, ज्ञान और सब प्रकार के यत्न में और उस प्रेम में जो हमसे रखते हो बढ़ते जाते हो, वैसे ही दान के काम में भी बढ़ते जाओ'' – 2 कुरिंथि. 8:7

दूसरा **अनुपातिक**

''सप्ताह के पहले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़े कि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े'' – 1कुरिंथि. 16:2

तीसरा **बहुतायत**

''अब हे भाईयों, हम तुम्हें परमेश्वर के उस अनुग्रह का समाचार देते हैं जो मकिदुनिया की कलीसियाओं पर हुआ है कि क्लेश की बड़ी परीक्षा में उनके बड़े आनन्द और भारी कंगालपन के बढ़ जाने से उनकी उदारता बहुत बढ़ गई ओर उनके विषय में मेरी ये गवाही है कि उन्होंने अपनी सामर्थ भर वरन् सामर्थ से भी बाहर मन से दिया'' – 2कुरिंथि. 8:1–3

दशमांश मे मूल सिद्धान्तों की अनुमति

1. **परमेश्वर के स्वामित्व**

   दशमांश ये याद दिलाता है कि सब कुछ प्रभु का है केवल 10 प्रतिशत नहीं पर 90 प्रतिशत भी।

- दूसरा हमारा देना **<u>अनुपातिक</u>** होना चाहिए

  1 कुरिंथि. 16:2 कहता है *''सप्ताह के पहले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदन के अनुसार कुछ अपने पास रख छोडे कि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े''*

  दशवांश के बारे में यही बात हरेक एक समान राशि नहीं देता वह व्यक्ति जो कम कमाता है, कम देता है वह व्यक्ति जो अधिक कमाता है अधिक देता है। यह हमारी आय का एक अनुपात होता है। दशवांश अनुपातिक देना है।

- तीसरा हमारा देना **<u>बहुतायत</u>** से होता है

  2 कुरिन्थियों 8 के आरम्भ में पौलुस ऐसे कहता है, (प्रशिक्षण पुस्तिका के नोट से पढ़ें)

  भले ही वे लोग बड़े ही कठिन समय में से गुजर रहे थे, तौभी वे वास्तव मे देना चाहते थे। अपनी घटी से भी बढ़कर। पौलुस आनन्दित था, क्योंकि उनके पास अपने साधनों के साथ परमेश्वर की आराधना के लिए एक सही तरह का रवैया था।

इसलिए हमारा दान देना हर्षपूर्ण, समानुपातिक और बहुतायात से होना चाहिए। ये पुराने नियम की व्यवस्था के आधाार पर नए नियम की समझ है। यदि हम दशवांश को व्यवस्था ही समझें तब हमने परमेश्वर के हृदय को दशवांश के विषय पर खो दिया है।

दशवांश पर <u>परमेश्वर के वचन में कुछ आधारभुत नियम</u> छिपे हुए हैं :

- इन सबमें सबसे पहला नियम **<u>परमेश्वर के स्वामित्व</u>** से है।

  - दशवांश इस बात की याद दिलाना है कि परमेश्वर सब वस्तुओं का मालिक है, केवल दस प्रतिशत ही नहीं परन्तु 90 प्रतिशत का भी।

  - इसलिए परमेश्वर कहता है मेरे प्रति 10 प्रतिशत मे आज्ञाकारी रह, और बाकि के लिए याद रख कि तू इसका भण्डारी है, और मैं इसे उस तरीके से प्रयोग करूंगा जो मुझे खुशी देता हो।

  - जीवन की सम्पत्तियों के प्रति यह हमारे पूरे दृष्टिकोण को बदल देता है। अब हम उनके प्रयोग के बारे में प्रार्थना करते हैं। ''प्रभु क्या यही तरीका है, जिसमें आप चाहते हैं कि मैं अपनी आय इस तरह से खर्च करूं?''

  - एक विश्वासी सच्चे दायित्व के लिए बजट बनाकर जीवन यापन करे तो अच्छी तरह जीवन जी सकेगा।

हर एक व्यक्ति के **हृदय का प्रत्युतर** ..... नया नियम का हमेशा मुख्य विषय रहा है। प्रारम्भिक विश्वासी व्यवस्था से बंधे हुए नहीं थे, परन्तु प्रेम के बन्धन में थे। उनका भण्डारीपन प्रेम का स्वाभाविक प्रदर्शन था। फिर भी ये हमेशा समझा गया कि प्रेम का प्रत्युतर विश्वासी को कानूनी आवश्यकता से ऊपर ले जाएगा जो पुराने नियम में है। (मती 5:21–42; लूका 12:1–4)।

उनका परमेश्वर के प्रति और दूसरों के प्रति प्रेम का प्रदर्शन इस तरह होगा :

पहला **हर्षपूर्ण** .....

''हर एक जन जैसा मन में ठाने दान करे, ना कुढ़ के ओर ना दबाव से क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है'' – 2 कुरिंथि. 9:7

''जो जैसे हर बात में अर्थात विश्वास, वचन, ज्ञान और सब प्रकार के यत्न में और उस प्रेम में जो हमसे रखते हो बढ़ते जाते हो, वैसे ही दान के काम में भी बढ़ते जाओ'' – 2 कुरिंथि. 8:7

दूसरा **अनुपातिक** .....

''सप्ताह के पहले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़े कि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े'' – 1कुरिंथि. 16:2

तीसरा **बहुतायत** .....

''अब हे भाईयों, हम तुम्हें परमेश्वर के उस अनुग्रह का समाचार देते हैं जो मकिदुनिया की कलीसियाओं पर हुआ है कि क्लेश की बड़ी परीक्षा में उनके बड़े आनन्द और भारी कंगालपन के बढ़ जाने से उनकी उदारता बहुत बढ़ गई ओर उनके विषय में मेरी ये गवाही है कि उन्होंने अपनी सामर्थ भर वरन् सामर्थ से भी बाहर मन से दिया'' – 2कुरिथि. 8:1–3

दशमांश मे मूल सिद्धान्तों की अनुमति

1. **परमेश्वर के स्वामित्व** .....

दशमांश ये याद दिलाता है कि सब कुछ प्रभु का है केवल 10 प्रतिशत नहीं पर 90 प्रतिशत भी।

दूसरा नियम **<u>ध्यान का केन्द्र</u>** है

. ० दशमांश हमें भौतिक वस्तुओं के प्रति हमारे विचारों को बदलने मे सहायक होता है।

लूका 12, में यीशु कहते हैं... *''स्वर्ग पर ऐसा धन इक्टठा करों जो घटता नहीं।''*

अपनी सम्पत्ति बेचकर दान दो, और अपने लिए ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात स्वर्ग पर ऐसा धन इक्टठा करों जो घटता नहीं, और जिसके निकट चोर नहीं जाता और कीड़ा नहीं बिगाड़ता क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।''

फिर उसने कहा, *''...और जिसके निकट चोर नहीं जाता और कीड़ा नहीं बिगाड़ता क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।''*

यीशु जानता था कि, ये सच नही होगा। वो हमारा पहिला ध्यान अपनी आत्मिक बातो पर लगाना चाहता था। हमारी पहिली प्रथमिकता परमेश्वर की बातों पर।

'बाइबल कहती है, कि पैसे का ''लालच'' सब बुराई की जड़ हैं। पैसे अपने आप मे बुराई नही। परमेश्वर इसका प्रयोग अपने राज्य की उन्नति के लिए करता है। पर ये पैसे का ''लालच'' है जो सब बुराई की जड़ हैं।

हमने पिछले अधिवेशन में सीखा, कि आरभ्भिक विश्वासियो की सब वस्तुऐ सांझे की थी और वे अपनी–2 सम्पति बेच बेच कर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे। यीशु ने हमे अपने राज्य पर ध्यान लगाने के लिए बुलाया है...लोगों की जरूरते पूरा करना...बजाए कि स्वयम् की (मती 6:33)।

2. **ध्यान का केन्द्र**

दशमांश हमें भौतिक वस्तुओं के प्रति हमारे विचारों को बदलने मे सहायक होता है।

'अपनी सम्पत्ति बेचकर दान दो, और अपने लिए ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात स्वर्ग पर ऐसा धन इक्ट्ठा करों जो घटता नहीं और जिसके निकट चोर नहीं जाता और कीड़ा नहीं बिगाड़ता क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।'' — लूका 12:33—34

''और वे यब विश्वास करने वाले इक्ट्ठे रहते थे और उनकी सब वस्तुऐ सांझे की थी और वे अपनी—2 सम्पति बेच बेच कर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे'' — प्रेरित 2:44—45

3. **आशिष के नाप**

दशमांश देना ''बोने और काटने'' के अनन्त सिद्धान्त की चाल को ठीक करता है :

''दिया करो तो तुम्हे भी दिया जाएगा, लोग पूरा नाप दबा दबा कर और हिला हिला कर और उभरता हुआ, तुम्हारी गोद में डालेंगे क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा'' — लूका 6:35

''धोखा ना खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा, क्योंकि जो अपने शरीर से बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा और जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा, हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न रहें तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे'' — गलातीयों 6:7—9

''परन्तु बात तो यह है कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा। सो जो बाने वाले बीज और भोजन के लिए रोटी देता है वह तुम्हे बीज देगा और बढ़ाएगा कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिए जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ'' — 2 कुरिथि. 9:6 और 10—11

4. **प्रथम फलों**

हमारी आय का दशमांश धर्मशास्त्र के इस महत्वपूर्ण सिद्धान्त को पुरा करता है।

और व्यवस्था में यह भी लिखा है कि हम अपने पहलौठों चाहे पशु या मनुष्य के हों और अपने पशुओं को परमेश्वर के भवन में ले आऐगें, और याजक जो सेवा करते हैं को दे देंगे। हम यह भी जिम्मेदारी समझते हैं कि हर वर्ष अपनी फसल का पहला फल और पेड़ों का पहला फल परमेश्वर के भवन में ले आएगें।

- दशंवांश से संबंधित तीसरा नियम **<u>आशिष के नाप</u>** से है

  ० दशमांश देना ''बोने और काटने'' के अनन्त सिद्धान्त की चाल को ठीक करता है :

  ० लूका 6:38 में यीशु कहते हैं... *''दिया करो तो तुम्हे भी दिया जाएगा, लोग पूरा नाप दबा दबा कर और हिला हिला कर और उभरता हुआ, तुम्हारी गोद में डालेंगे क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा''*

  ० बहुत से विशवासी इस बात पर बहस करते हैं कि दशंवांश, ''पूरी आय'' (विभिन्न तरह के करो को निकाले लने बाद) या ''लगभग आय'' (विभिन्न तरह के करो को निकालने से पहले) पर कौन सी आय पर देना चाहिए। सही प्रश्न ये है कि... परमेश्वर कहता है, जिस नाप से आप देते हैं उसी नाप से मैं तुम्हे आशिषित करूंगा। इसलिए आप किस आय पर आशिषित होना चाहता हैं... पुरी आय या लगभग आय? हम परमेश्वर को देने से नही रूक सकते हैं।

  ० गलातीयों 6:7—9 में पौलुस कहता है *''धोखा ना खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा, क्योंकि जो अपने शरीर से बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा और जो आत्मा के लिए बोता है वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा, हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न रहों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे''*

  ० 2 कुरिथि. 9:6... *'' परन्तु बात तो यह है कि जो थोड़ा बाता है वह थोड़ा काटेगा।''जितना अधिक बाते हैं उतना अधिक काटते हैं। बीजने और काटने का यह नियम है। परमेश्वर आपको इतना अधिक देगा कि आप उतना ही अधिक दूसरो को देते चले जाएं।*

  ० 2 कुरिन्थियों 9:10—11... *सो जो बाने वाले बीज, और भोजन के लिए रोटी देता है वह तुम्हे बीज देगा, और उसे फलचन्त करेगा। बीजने और काटने का यह नियम है परमेश्वर हमे इसलिए अधिकाई से नही दे रहा कि कहीं हम इसे अपने लिए इक्टठा करें। वह हमें अधिक इसलिए दे रहा है ताकि हम उदारता से दूसरे के साथ बांट सकें।*

- दशंवांश से संबंधित चौथा नियम **<u>प्रथम फलों</u>** से है
  ० पुराने नियम में जब परमेश्वर अपने लोगों को दशवांश देने के अभ्यास की शिक्षा दे रहा था तो वह उन्हे इस बात का निर्देश भी दे रहा था कि वे बचे हुए नहीं परन्तु प्रथम फलों को दें। वह दुध की मलाई नहीं चाहता परन्तु दुध का वसा चाहता है। इसका अर्थ यह नहीं कि वह अन्तिम दस प्रतिशत लेना चाहता था परन्तु वह प्रथम दस प्रतिशत चाहता था।
  गिनती 18 में उसने उनसे कहा कि वे प्रथम उपज, पहली दाखरस, पहला तेल, बलिदान या परमेश्वर को देने के लिए पहले पहलौठे, को दें। इसमें प्रथम पैदा हुए बच्चे अर्थात गर्भ का पहला फल भी शामिल था।

2. **ध्यान का केन्द्र**

दशमांश हमें भौतिक वस्तुओं के प्रति हमारे विचारों को बदलने मे सहायक होता है।

'अपनी सम्पत्ति बेचकर दान दो, और अपने लिए ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात स्वर्ग पर ऐसा धन इक्ट्ठा करों जो घटता नहीं और जिसके निकट चोर नहीं जाता और कीड़ा नहीं बिगाड़ता क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।'' — लूका 12:33—34

''और वे यब विश्वास करने वाले इक्ट्ठे रहते थे और उनकी सब वस्तुऐ साझे की थी और वे अपनी—2 सम्पति बेच बेच कर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे'' — प्रेरित 2:44—45

3. **आशिष के नाप**

दशमांश देना ''बोने और काटने'' के अनन्त सिद्धान्त की चाल को ठीक करता है :

''दिया करो तो तुम्हे भी दिया जाएगा, लोग पूरा नाप दबा दबा कर और हिला हिला कर और उभरता हुआ, तुम्हारी गोद में डालेंगे क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा'' — लूका 6:35

''धोखा ना खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा, क्योंकि जो अपने शरीर से बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा और जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा, हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न रहें तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे'' — गलातीयों 6:7—9

''परन्तु बात तो यह है कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा। सो जो बाने वाले बीज और भोजन के लिए रोटी देता है वह तुम्हे बीज देगा और बढ़ाएगा कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिए जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ'' — 2 कुरिथि. 9:6 और 10—11

4. **प्रथम फलों**

हमारी आय का दशमांश धर्मशास्त्र के इस महत्वपूर्ण सिद्धान्त को पुरा करता है।

और व्यवस्था में यह भी लिखा है कि हम अपने पहलौठों चाहे पशु या मनुष्य के हों और अपने पशुओं को परमेश्वर के भवन में ले आऐगें, और याजक जो सेवा करते हैं को दे देंगे। हम यह भी जिम्मेदारी समझते हैं कि हर वर्ष अपनी फसल का पहला फल और पेड़ों का पहला फल परमेश्वर के भवन में ले आएगें।

- परमेश्वर के लोगों को सजा मिलने के बाद और बाबुल की बुधुवाई मे जाने के बाद जब वे लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश में अपने राष्ट्र की पुनःस्थापना के लिए वापस आए तब उन्होंने दशंवाश को देने की प्रतिज्ञा की कि वे इसके प्रति अब से उत्तरदायी रहेगें।

  नहेमयाह 10:35—37 *''और हम अपने परमेश्वर के भवन के भण्डार में अपनी भूमि की पहली फसल और उपज और पेड़ों के फल, नया दाखमधु और टटका तेल जो याजक भवन मे सेवा टहल करते है उनके पास ले आएगें। और अपनी फसल का दशमांश लेवियों के पास लाया करेंगे क्योंकि वे लेविय हैं जो हमारी खेती के सब नगरों में दशंमांश लेते है...''*

  यदि परमेश्वर हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण स्थान है, तो हम उसे अपना सब कुछ देखभाल कर लेने के बाद बचा खुचा नहीं देना चाहेंगे।

  हममें से बहुत से लोगों के पास मेम्ना या फल या फसल परमेश्वर को देने के के लिए नहीं है, परन्तु हमारे पास पैसा है। यदि हम परमेश्वर के नियमों पर चलना चाहते हैं, तो हम परमेश्वर को प्रथम स्थान देते हुए प्रथम फल के नियमों का पालन करेंगे। अपनी आय का पहला हिस्सा जिस भी काम के लिए हम प्रयोग करते हैं, हमारा दशवांश होना चाहिए।

''और हम अपने परमेश्वर के भवन के भण्डार में अपनी भूमि की पहली फसल और उपज और पेड़ों के फल, नया दाखमधु और टटका तेल जो याजक भवन मे सेवा टहल करते है उनके पास ले आएगें। और अपनी फसल का दशमांश लेवियों के पास लाया करेंगे क्योंकि वे लेविय हैं, जो हमारी खेती के सब नगरों में दशंमांश लेते है'' – नहेमयाह 10:35–37 (देखिए गिनती 14:12–17)

5 **''भण्डारगृह''**

दशमांश देना कलिसीया को बनाए रखने का परमेश्वर का आधारभूत साधन है।

''सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे''– मलाकी 3:10

''और उनमें कोई भी दरिद्र न था, क्योंकि जिसके पास भूमि या घर थे वे उनको बेच बेच कर बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते और प्रेरितो के पावों पर रख देते थे और जैसी जिसे आवश्यकता होती थी उसके क्रमानुसार हर एक को बांट दिया करते थे'' – प्रेरितों 4:34–35

6. **नाश करने वाले**

दश्मांश आर्थिक संकट से बचाव है।

''परमेश्वर पाता है या शैतान जमा करता है''

दशमांश से आगे के विषयों पर बाइबल क्या बोलती है :

– **भेंट** – परमेश्वर के वे उपहार हैं जो आधारमय रूप से दशवांश से अलग हैं। ये धन्यवाद प्रगट करने के लिए स्वतंत्र इच्छा से दिए जाते हैं। या किसी विशेष जरूरत को, या व्यक्ति या सेवकाई को मदद करने के लिए दिए जाते हैं।

धर्मशास्त्र के विचार से ''भेंट'' देने की अनुमति नहीं है यदि आपने पहले दशमांश नहीं दिया है।

– **दान** – दान, दया या धमार्थ का वह काम है, जो आप परमेश्वर के प्रति बढ़ने वाले प्रेम के कारण किसी गरीब की मदद के लिए करते हैं। यह भी दशमांश से अलग है।

- पांचवां नियम **<u>भण्डारगृह</u>** से है।

    - भण्डारगृह का नियम पवित्रशास्त्र के अभी–2 पढ़े गए नहेमयाह और मलाकी के सदर्भो पर आधारित है।

    - पुराने नियम के समय में लोगों को हर सप्ताह या दा सप्ताहों के बाद मज़दूरी नहीं मिलती थी। लोगों को अपनी फसल मंदिर मे ले आनी थी, जहां के बहुत सारे कमरे भण्डारगृह के रूप में प्रयोग होते थे। सारा साल लोगों की जरूरतें परमेश्वर के मंदिर से पूरी की जाती थी। जिन्हें भण्डारगृहों को भूमि के दशवांशों से भरा जाता था।

    - इसलिए हमारा भण्डारगृह कहां है? हम आत्मिक भोजन कहां से खाते हैं? हमें परमेश्वर का वचन कहां से प्राप्त हो रहा है? हमारी आत्मिक देखभाल कहां से की जा रही है?

    - यदि आप एक होटल से खाना खाते हैं, तो आप दूसरे होटल में पैसा अदा नही करेंगे! कौन सी कलीसिया आपको भोजन खिला रही है, और उत्साहित कर रही है, और सामर्थी बना रही है, और आशिषित कर रही है.. यह है आपका भण्डारगृह। इसलिए आपको दशवांश वहां ले जाना चाहिए।

    - परमेश्वर कहता है कि, तुम अपने दशवांश भण्डारगृह में ले आओ, ''ताकि मेरे भण्डार में भोजन वस्तु रहे।'' कलीसिया की संगति में परमेश्वर की आरधना के लिए किए जा रहे काम में और दूसरों के जीवनों तक सुसमाचार पहुचाने में दशवांश का प्रयोग होना चाहिए।

    - प्रेरितों के काम 4:34–35 में हम देखते हैं कि, आरम्भ की कलीसिया ने जो कुछ उनका था बेचना शुरू किया, और प्रेरितो के पावों में इससे प्राप्त धन को रख दिया। लोगों ने प्रेरितों पर विश्वास किया कि वे इसे जिन्हें जरूरत हैं उन्हे बांट दें, यह अब ''परमेश्वर का धन'' था; न कि उनका अपना।

''और हम अपने परमेश्वर के भवन के भण्डार में अपनी भूमि की पहली फसल और उपज और पेड़ों के फल, नया दाखमधु और टटका तेल जो याजक भवन मे सेवा टहल करते है उनके पास ले आएगें। और अपनी फसल का दशमांश लेवियों के पास लाया करेंगे क्योंकि वे लेविय हैं, जो हमारी खेती के सब नगरों में दशंमांश लेते है'' – नहेमयाह 10:35–37 (देखिए गिनती 14:12–17)

5 **''भण्डारगृह''**

दशमांश देना कलिसीया को बनाए रखने का परमेश्वर का आधारभूत साधन है।

''सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे''– मलाकी 3:10

''और उनमें कोई भी दरिद्र न था, क्योंकि जिसके पास भूमि या घर थे वे उनको बेच बेच कर बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते और प्रेरितो के पावों पर रख देते थे और जैसी जिसे आवश्यकता होती थी उसके क्रमानुसार हर एक को बांट दिया करते थे'' – प्रेरितों 4:34–35

6. **नाश करने वाले**

दशमांश आर्थिक संकट से बचाव है।

''परमेश्वर पाता है या शैतान जमा करता है''

दशमांश से आगे के विषयों पर बाइबल क्या बोलती है :

– **भेंट** – परमेश्वर के वे उपहार हैं जो आधारमय रूप से दशवांश से अलग हैं। ये धन्यवाद प्रगट करने के लिए स्वतंत्र इच्छा से दिए जाते हैं। या किसी विशेष जरूरत को, या व्यक्ति या सेवकाई को मदद करने के लिए दिए जाते हैं।

धर्मशास्त्र के विचार से ''भेंट'' देने की अनुमति नहीं है यदि आपने पहले दशमांश नहीं दिया है।

– **दान** – दान, दया या धमार्थ का वह काम है, जो आप परमेश्वर के प्रति बढ़ने वाले प्रेम के कारण किसी गरीब की मदद के लिए करते हैं। यह भी दशमांश से अलग है।

- अन्तिम नियम **<u>नाश करने वाले</u>** का नियम है

  - मलाकी (3:11) में आपको याद होगा कि परमेश्वर ने कहा कि, यदि हम दशवांश देगें तो वह नाश करने वाले को घुड़केगा कि वह हमारी भूमि की उपज को नाश न करें। परन्तु यदि हम अपना दशवांश देने में फेल हो जाते हैं, तो वह नाश करने वालें को नही घुड़केगा और हम बिना वजह आर्थिक संकट का सामना करेंगा।

  - दशवांश आपको धनी नहीं बना देगा परन्तु परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि, वह हमें आर्थिक संकट से बचाकर रखेगा।

  - इसकी जांच समय–2 पर होगी। यदि हम विश्वासयोग्य हैं तो परमेश्वर हमारी देख भाल करेगा, और हमें आशिषित करेगा जब परीक्षा खत्म हो जाएगी।

  - एक विश्वासी व्यापारी अपने पड़ोसी के आर्थिक संकट से भरे हुऐ अनुभवों को सुन रहा था। विश्वासी व्यापारी ने अपने पड़ौसी से कहा कि क्या वह दशवांश दे रहा था? उसके पड़ौसी ने कहा, ''कि वह उससे मजाक कर रहा है। मैं दश्वाश नहीं दे सकता... मैं तो अपने बिल भी नहीं अदा कर सकता''। तब विश्वासी ने उससे कहा कि वह घर वापस चला जाए और अनैच्छिक बिलों को इक्ट्ठा करके उनकी रकम को जोड़ ले, और देखे कि क्या वह रकम दिए जाने वाले दशवांश के बराबर आती है। उसने ऐसा किया और आश्चर्य में पड़ गया, क्योंकि यह उसके दशवांश दिए जाने वाली रकम के बिल्कुल पास वाली रकम थी।

  - यदि हम परमेश्वर को दशवांश देते हैं, तो वह हमारे कपड़ो को लम्बे समय तक चलाता है। वह हमारे भोजन को बढ़ाता है। वह हमारी सभी बातों को अपने नियंत्रण मे ले लेता है, ताकि हमें अधिक सकंटों में न जाना पड़े।

  - ''नाश करने वाला'' नियम ऐसे भी लिखा जा सकता है : ''या तो परमेंश्वर पाता है या फिर शैतान जमा करता हैं!''

''और हम अपने परमेश्वर के भवन के भण्डार में अपनी भूमि की पहली फसल और उपज और पेड़ों के फल, नया दाखमधु और टटका तेल जो याजक भवन मे सेवा टहल करते है उनके पास ले आएगें। और अपनी फसल का दशमांश लेवियों के पास लाया करेंगे क्योंकि वे लेविय हैं, जो हमारी खेती के सब नगरों में दशंमांश लेते है'' – नहेमयाह 10:35–37 (देखिए गिनती 14:12–17)

5 **''भण्डारगृह''**

दशमांश देना कलिसीया को बनाए रखने का परमेश्वर का आधारभूत साधन है।

''सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे''– मलाकी 3:10

''और उनमें कोई भी दरिद्र न था, क्योंकि जिसके पास भूमि या घर थे वे उनको बेच बेच कर बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते और प्रेरितो के पावों पर रख देते थे और जैसी जिसे आवश्यकता होती थी उसके क्रमानुसार हर एक को बांट दिया करते थे'' – प्रेरितों 4:34–35

6. **नाश करने वाले**

दशमांश आर्थिक संकट से बचाव है।

''परमेश्वर पाता है या शैतान जमा करता है''

दशमांश से आगे के विषयों पर बाइबल क्या बोलती है :

– **भेंट** – परमेश्वर के वे उपहार हैं जो आधारमय रूप से दशवांश से अलग हैं। ये धन्यवाद प्रगट करने के लिए स्वतंत्र इच्छा से दिए जाते हैं। या किसी विशेष जरूरत को, या व्यक्ति या सेवकाई को मदद करने के लिए दिए जाते हैं।

धर्मशास्त्र के विचार से ''भेंट'' देने की अनुमति नहीं है यदि आपने पहले दशमांश नहीं दिया है।

– **दान** – दान, दया या धमार्थ का वह काम है, जो आप परमेश्वर के प्रति बढ़ने वाले प्रेम के कारण किसी गरीब की मदद के लिए करते हैं। यह भी दशमांश से अलग है।

दशवांश से आगे

- जैसा कि हमने पहले कहा दशवांश वह नींव है जिस पर भण्डारीपन के जीवन का निर्माण होता है दशवांश से आगे बाइबल दो और तरह के देने के बारे में बात करती है।

- **भेंट**, परमेश्वर के वे उपहार हैं जो आधारमय रूप से दशवांश से अलग हैं। ये धन्यवाद प्रगट करने के लिए स्वतंत्र इच्छा से दिए जाते हैं। या किसी विशेष जरूरत को, या व्यक्ति या सेवकाई को मदद करने के लिए दिए जाते हैं।

    - पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों को बलिदान और भेंटें विशेष अवसरों (विशेष घटनाएं, धन्यवाद के समय, मौसमी त्योहारों या भवन निर्माण) पर लाना था।

    - इसे दशवांश में शामिल नही करना चाहिए। बहुत सारी सेवकाईयां, मसीह प्रचार के लिए टी वी और रेडियों प्रोग्राम, प्रचारक और अच्छे कारणों के लिए यह मदद है। परन्तु यह सब ''भेटो'' में आता है और दशवांश से अलग है।

- **दान**, दया या धर्मार्थ का वह काम है, जो आप परमेश्वर के प्रति बढ़ने वाले प्रेम के कारण किसी गरीब की मदद के लिए करते हैं।

    - दान या धर्मार्थ के काम को भी दशवांश से अलग रखना चाहिए।

    - परमेश्वर चाहता है कि हम उसके प्रेम के कारण जरूरत मन्दों की निस्वार्थ मदद करें। यह हमारे उद्धार का हिस्सा नहीं है जैसा कि हिन्दु धर्म के अनुयायीयों के साथ है। परन्तु परमेश्वर जरूरतमन्दों की देखभाल करता है और वह चाहता है कि हम अपनी योग्यता के अनुसार जरूरतमन्दो की मदद करें।

''और हम अपने परमेश्वर के भवन के भण्डार में अपनी भूमि की पहली फसल और उपज और पेड़ों क फल, नया दाखमधु और टटका तेल जो याजक भवन मे सेवा टहल करते है उनके पास ले आएगें। और अपनी फसल का दशमांश लेवियों के पास लाया करेंगे क्योंकि वे लेविय हैं, जो हमारी खेती के सब नगरों में दशंमांश लेते है'' – नहेमयाह 10:35–37 (देखिए गिनती 14:12–17)

5 **''भण्डारगृह''**

दशमांश देना कलिसीया को बनाए रखने का परमेश्वर का आधारभूत साधन है।

''सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे''– मलाकी 3:10

''और उनमें कोई भी दरिद्र न था, क्योंकि जिसके पास भूमि या घर थे वे उनको बेच बेच कर बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते और प्रेरितो के पावों पर रख देते थे और जैसी जिसे आवश्यकता होती थी उसके क्रमानुसार हर एक को बांट दिया करते थे'' – प्रेरितों 4:34–35

6. **नाश करने वाले**

दश्मांश आर्थिक संकट से बचाव है।

''परमेश्वर पाता है या शैतान जमा करता है''

दशमांश से आगे के विषयों पर बाइबल क्या बोलती है :

– **भेंट** – परमेश्वर के वे उपहार हैं जो आधारमय रूप से दशवांश से अलग हैं। ये धन्यवाद प्रगट करने के लिए स्वतंत्र इच्छा से दिए जाते हैं। या किसी विशेष जरूरत को, या व्यक्ति या सेवकाई को मदद करने के लिए दिए जाते हैं।

धर्मशास्त्र के विचार से ''भेंट'' देने की अनुमति नहीं है यदि आपने पहले दशमांश नहीं दिया है।

– **दान** – दान, दया या धमार्थ का वह काम है, जो आप परमेश्वर के प्रति बढ़ने वाले प्रेम के कारण किसी गरीब की मदद के लिए करते हैं। यह भी दशमांश से अलग है।

आओ हम दशवांश के तीन उद्धेश्यों के सार को देखें।

- पहला अपने धन को सुरक्षित करना नहीं, परन्तु अपने **आप** को परमेश्वर के लिए सुरक्षित करना।

    - यीशु की देने के बारे में प्राथमिक चिन्ता उस धन से नहीं थी जो हम उसे देते हैं, परन्तु अपने आप को उसे देने से थी। जब पौलुस ने 2कुरिन्थियों 8:5 में मकिदूनियों को देने के बारे में बातचीत की तो उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उन्होंने सबसे पहलें ''अपने आप को'' प्रभु को दे दिया था।

    - जब हम अपने आप को प्रभु को सौंप देते हैं, तब हम उदारता से अपने धन को और अपने सब कुछ को उसे दे देते हैं।

    - मिश्नरी डाक्टर बिल स्कोट ने यह कहा, ''हिन्दु जब अपने देवी–देवताओं की उपासना करने जाते हैं, तो वे बिना भेटों के जाते हैं। एक समय सरकारी आंकड़े यह दिखाते थें, कि 'देने के लिए' एक हजार रूपये सालाना औसत आती है। इसी के साथ बहुत लोग घुम्रपान, पांच रूपये सिनेमा, और सौ रूपये महिना आदि अपने देवता पर खर्चते हैं। अब चूंकि वे अपने पुराने जीवन से छुटकारा पा चुकें हैं, और अपनी स्वस्थ जीवन शैली के कारण दवाईयों पर कम खर्चा करते हैं, इसलिए विश्वासी अब आसानी से कम से कम इतना तो अपने परमेश्वर और प्रभु यीशु के पिता को दे सकते हैं।

- दशवांश का दुसरा उद्धेश्य अपनी **प्राथमिकताओं** को स्थापित करना है।

    - जब हम परमेश्वर को एक ''विशेष हिस्सा'' देते हैं और नियमित देते हैं, उसे उसके सामने रखते है और इससे उसका आदर करते हैं, तब यह हमारे जीवनों का नियमित प्रदर्शन बन जाता है कि वास्तव में कौन और क्या हमारे जीवन में ''प्रथम'' है।

    - हम सप्ताह–दर–सप्ताह कहते जाता है, ''प्रभु, आप प्रथम है!'' और इसे दिखाते हैं, न केवल अपनी आराधना और स्तुति में परन्तु अपने धन के द्वारा भी।

    - व्यवस्थाविवरण 14:23 में लीविंग बाइबल का अनुवाद इस प्रकार कहता है कि दशवांश का उद्धेश्य, ''... आपको आपके जीवनों में हमेशा परमेश्वर को प्रथम रखना सीखाना है''।

    - यीशु जानता था कि उसके प्रभुत्व को एक जीवन में स्वीकारे जाने में भौतिक वस्तुऐं एक बहुत बड़ी रूकावट होगीं। यह महत्वपूर्ण है कि एक व्यक्ति नियमित रूप से उसके जीवन में आने वाली, ''प्रथम बात को प्रगट करता रहे। उसने हमें मती 6:31–33 में यह बताया कि वह इसे समझता है, कि इस घरती पर जीवन यापन के लिए भौतिक वस्तुओं की जरूरत पड़ेगी। परन्तु हमें इन सबके बारे में चिन्ता नहीं करनी है। यदि हम उसे प्रथम रखते हैं तो वह उन सब चीजों को दे देगा जिनकी हमें जरूरत है।

दशवांश के उद्धेश्ये

अपने आप को

1. अपने धन को सुरक्षित करना नहीं परन्तु ..... परमेश्वर के लिए सुरक्षित करना।

हमारे देने में मसीह की विशेष रूची नहीं है, कि कितना हम देते हैं जो हमारे पास है। जब पौलूस ने मकिदुनिया के लोगों को देने के लिए आज्ञा दी, तो यह इसलिए थी, क्योंकि ''पहले'' उन्होंने अपने आप को प्रभु को दे दिया (2कुरिंथि. 8:5)। जब हमने अपने आपको परमेश्वर को समर्पित कर दिया है, तब हम अपने पैसे और हर एक चीज़ में से उदारता से देंगे।

प्राथमिकताओं

2. अपनी .....को स्थापित करना

यीशु जानता था कि उसके प्रभुत्व को एक जीवन में स्वीकारे जाने में भौतिक वस्तुऐं एक बहुत बड़ी रूकावट होगी। यह महत्वपूर्ण है कि एक व्यक्ति नियमित रूप से उसके जीवन में आने वाली, ''प्रथम बात को प्रगट करता रहे।

. दशवांश का उद्धेश्य, *''... आपको आपके जीवनों में हमेशा परमेश्वर को प्रथम रखना सीखाना है''* – व्यवस्था विवरण 14:23 लीविंग बाइबल का अनुवाद से

''इसलिए तुम चिन्ता करके यह न कहना कि हम क्या खाऐगें या क्या पीयेगे या क्या पहनेगे? क्योंकि अन्यजातियां इन सब वस्तुओं की खोज मे रहती हैं और तुम्हारा स्वर्गिय पिता जानता है कि तुम्हे ये सब वस्तुऐं चाहिएं, इसलिए पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुऐं तुम्हे मिल जाऐगी'' – मती 6:19.21 और 31–33

विश्वास

3. हमारे ..... को उत्तेजित करना।

परमेश्वर के लोगों के लिए भौतिक सम्पति के क्षेत्र में आज्ञाकारिता के लिए विश्वास एक बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण कदम है। ये समस्त आशिषों और आत्मिक विकास के क्षेत्रों को खोलेगा, जिसे हम यदि विश्वास के कदम न लें तो कभी भी न खोज पाऐगें।

- दशवांश का तीसरा उद्धेश्य हमारे **<u>विश्वास</u>** को उकसाना है।

    - जब हम अपने भौतिक सम्पति के क्षेत्र में आज्ञाकारी होते हैं, तो यह विश्वास का एक बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण कदम होता है। ये समस्त आशिष और आत्मिक विकास के क्षेत्रों को खोलेगा जिसे हम यदि विश्वास के कदम न लें तो कभी भी न खोज पाऐगें।

- हमारी अपनी व्यक्तिगत गवाही दशवांश देने और परमेश्वर की विवासयोग्यता के बारे में।

    - जब हमने प्रभु को विश्वासयोग्यता से दशवांश दिया तब हमने यह अनुभव किया तो परमेश्वर
        - हमारे लिए नौकरियां ले आया। (पहले डालस मे; बाद में फोर्ड मोटर कंपनी में) (डान)
        - न आशा की जाने वाली आय
        - एक साल में घर का बनना, किस्तों को बचाने के लिए (डान)
        - शांति – उसकी देखभाल में विश्वास

    - जब हमने विश्वासयोग्यता से दशवांश नहीं दिया तब हमने निम्न बातों का अनुभव किया।
        - स्वार्थपन और डर,
        - नाश करने वाला, न आशा किए जाने वाले बिलों के साथ बढ़ने लगा, चौपाया वाहन में गड़बड़ी, नई वस्तुओं की जरूरत, यहां तक कि चोरी
        - शान्ति की कमी

    - पैट रोबटसन द्वारा लिखित ''राज्य के भेद'' के हिस्सो को पढ़ें, जिसमे एक मिश्नरी का वर्णन है, जो दक्षिण अफ्रीका में जिन लोंगों के बीच सेवा कर रहा था उनको ''पूरा सत्य'' बताने के लिए परमेश्वर से चुनौती पाता है।

प्रार्थना से समाप्त करें।

दशवांश के उद्धेश्ये

अपने आप को

1. अपने धन को सुरक्षित करना नहीं परन्तु ..... परमेश्वर के लिए सुरक्षित करना।

हमारे देने में मसीह की विशेष रूची नहीं है, कि कितना हम देते हैं जो हमारे पास है। जब पौलूस ने मकिदुनिया के लोगों को देने के लिए आज्ञा दी, तो यह इसलिए थी, क्योंकि ''पहले'' उन्होंने अपने आप को प्रभु को दे दिया (2कुरिंथि. 8:5)। जब हमने अपने आपको परमेश्वर को समर्पित कर दिया है, तब हम अपने पैसे और हर एक चीज़ में से उदारता से देंगे।

प्राथमिकताओं

2. अपनी .....को स्थापित करना

यीशु जानता था कि उसके प्रभुत्व को एक जीवन में स्वीकारे जाने में भौतिक वस्तुऐं एक बहुत बड़ी रूकावट होगी। यह महत्वपूर्ण है कि एक व्यक्ति नियमित रूप से उसके जीवन में आने वाली, ''प्रथम बात को प्रगट करता रहे।

. दशवांश का उद्धेश्य, *''... आपको आपके जीवनों में हमेशा परमेश्वर को प्रथम रखना सीखाना है''* – व्यवस्था विवरण 14:23 लीविंग बाइबल का अनुवाद से

''इसलिए तुम चिन्ता करके यह न कहना कि हम क्या खाऐगें या क्या पीयेगे या क्या पहनेगे? क्योंकि अन्यजातियां इन सब वस्तुओं की खोज मे रहती हैं और तुम्हारा स्वर्गिय पिता जानता है कि तुम्हे ये सब वस्तुऐं चाहिएं, इसलिए पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुऐं तुम्हे मिल जाऐगी'' – मती 6:19.21 और 31–33

विश्वास

3. हमारे ..... को उत्तेजित करना।

परमेश्वर के लोगों के लिए भौतिक सम्पति के क्षेत्र में आज्ञाकारिता के लिए विश्वास एक बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण कदम है। ये समस्त आशिषों और आत्मिक विकास के क्षेत्रों को खोलेगा, जिसे हम यदि विश्वास के कदम न लें तो कभी भी न खोज पाऐगें।

1. आपके आत्मिक विकास में ''दशमांश'' देने का अभ्यास करना कैसे महत्पूर्ण स्थान रखता है?

2. आप ''प्रथम फल'' के सिद्धान्त को कैसे समझते हैं?

3. व्यवहारिक रूप में यदि आज अपने जीवन में लागू करें तो लूका 12:31—34 में यीशु हमें क्या बताना चाह रहें हैं?

4. मलाकी 3:7—12 सावधानी से पढ़िए।

   —परमेश्वर दशमांश के मामले को कितना गम्भीरता से लेता है?

   – ''भण्डार'' में दशमांश लाने की कौन सी विशेषता आप पाते हैं?

   – इस हिस्से से आप कितनी आशिषों की सूची बना सकते हैं, जिनकी परमेश्वर उनके साथ प्रतिज्ञा करता है जो दशंमांश के लिए उसकी आज्ञा का पालन करते हैं?

5. ''पैसे के प्रति नया व्यवहार'' पढ़ने के बाद तीन अत्यधिक महत्वपूर्ण विचार जो आपने पाए, उनकी सूची बनाएं।

   1.

   2.

   3.

प्रथम

— पिछले सप्ताह के प्रश्न पत्र में से प्रश्न 2, 3 और 4 के समूह के उत्तरों को जल्दी से देखें।

— समूह में स्वतंत्रता की निर्भरता को देखते हुए आप कुछ को ''तीमुथियस का पत्र'' बताने के लिए प्रोत्साहित करें। परन्तु जोर न दीजिए

— सभी ''तीमुथियस के पत्रों'' को जो पूरे हो गए है जमा कर लिजिए, जो अभी भी उन पर कार्य कर रहे हैं उन्हें उत्साहित कीजिए कि अगले सप्ताह एक प्रति लेते आंए।

— इस सप्ताह के प्रश्न पत्र को जमा कीजिए और पिछले सप्ताह के प्रश्न पत्र को लौटा दीजिए।

तब

— यदि किसी के पास दशमांश का व्यक्तिगत अनुभव हो तो उसे बताने दीजिए।

अगला — दशमांश के विषय में पूरी तौर से चर्चा करें।

1. ''प्रथम फल'' नियम क्या है?

2. ''भण्डारगृह'' के नियम के विषय में क्या महसूस करते हैं?

3. इस हिस्से में जो महत्वपूर्ण बातें रखी गई है, उन पर वार्ता कीजिए?

   नीतिवचन 11:24—25
   ''ऐसे थी हैं जो छितरा देते हैं तो भी उनकी बढ़ती ही होती है और ऐसे भी हैं जो यर्थात से कम देते हैं और इससे उनकी घटती ही होती है''।

   ''उदार व्यक्ति सम्पन्न हो जाता है और जो दूसरों की खेती सींचता हैं उसकी भी सिंची जाएगी''।

4. ''दशमांश का अभिप्राय आपके पैसे की सुरक्षा नहीं परन्तु आप परमेश्वर के लिए हो''। इस के बारे में उनका प्रत्युत्तर क्या है?

अन्त में

दशमांश देने के अभ्यास में किसी सदस्य को यदि कोई समस्याएं है तो उस पर पर चर्चा कीजिए।

अगले सप्ताह के लिये कार्य

1. प्रश्न पत्र 4 के अध्ययन को पूरा करें और उसे अगले अधिवेशन में लेकर आंए।